ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمۡوَٰلَهُم بِٱلَّيۡلِ وَٱلنَّهَارِ سِرّٗا وَعَلَانِيَةٗ فَلَهُمۡ
أَجۡرُهُمۡ عِندَ رَبِّهِمۡ وَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُونَ ٢٧٤
ٱلَّذِينَ يَأۡكُلُونَ ٱلرِّبَوٰاْ لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ ٱلَّذِي
يَتَخَبَّطُهُ ٱلشَّيۡطَٰنُ مِنَ ٱلۡمَسِّۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمۡ قَالُوٓاْ إِنَّمَا ٱلۡبَيۡعُ
مِثۡلُ ٱلرِّبَوٰاْۗ وَأَحَلَّ ٱللَّهُ ٱلۡبَيۡعَ وَحَرَّمَ ٱلرِّبَوٰاْۚ فَمَن جَآءَهُۥ
مَوۡعِظَةٞ مِّن رَّبِّهِۦ فَٱنتَهَىٰ فَلَهُۥ مَا سَلَفَ وَأَمۡرُهُۥٓ إِلَى ٱللَّهِۖ
وَمَنۡ عَادَ فَأُوْلَٰٓئِكَ أَصۡحَٰبُ ٱلنَّارِۖ هُمۡ فِيهَا خَٰلِدُونَ ٢٧٥
يَمۡحَقُ ٱللَّهُ ٱلرِّبَوٰاْ وَيُرۡبِي ٱلصَّدَقَٰتِۗ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ
أَثِيمٍ ٢٧٦ إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَأَقَامُواْ
ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُاْ ٱلزَّكَوٰةَ لَهُمۡ أَجۡرُهُمۡ عِندَ رَبِّهِمۡ وَلَا خَوۡفٌ
عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُونَ ٢٧٧ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَ
وَذَرُواْ مَا بَقِيَ مِنَ ٱلرِّبَوٰٓاْ إِن كُنتُم مُّؤۡمِنِينَ ٢٧٨ فَإِن لَّمۡ تَفۡعَلُواْ
فَأۡذَنُواْ بِحَرۡبٖ مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦۖ وَإِن تُبۡتُمۡ فَلَكُمۡ رُءُوسُ
أَمۡوَٰلِكُمۡ لَا تَظۡلِمُونَ وَلَا تُظۡلَمُونَ ٢٧٩ وَإِن كَانَ ذُو عُسۡرَةٖ
فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيۡسَرَةٖۚ وَأَن تَصَدَّقُواْ خَيۡرٞ لَّكُمۡ إِن كُنتُمۡ
تَعۡلَمُونَ ٢٨٠ وَٱتَّقُواْ يَوۡمٗا تُرۡجَعُونَ فِيهِ إِلَى ٱللَّهِۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ
نَفۡسٖ مَّا كَسَبَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُونَ ٢٨١

Theme	
Reward for giving charity. Prohibition of usury. Taking	सदक़ा करने का अज्र। सूद की

usury is like declaring war against Allah and His Rasool.	मनाही। सूद लेना अल्लाह और उसके रसूल के ख़िलाफ़ जंग का ऐलान करने के मुतरादिफ़ है।

Tarjumani

Those who spend their wealth in charity by night and day, secretly and openly, they will have their reward from their Rabb. They shall have nothing to fear or to grieve. Those who live on usury will not rise up before Allah except like those who are driven to madness by the touch of Shaitan. That is because they say: "Trading is no different than usury, but Allah has made trading lawful and usury unlawful. He who has received the admonition from his Rabb and has mended his way may keep his previous gains, Allah will be his judge. Those who turn back (repeat this crime), they shall be the inmates of hellfire wherein they will live forever. Allah decreases usury and increases charity. Allah does not like any sinning disbeliever. Those who believe and do good deeds,	जो लोग अपने माल शब व रोज़ खुले और छिपे ख़र्च करते हैं, उनका अज्र उनके रब के पास है और उनके लिए किसी खौफ़ और रंज का मक़ाम नहीं | मगर जो लोग सूद खाते हैं, उनका हाल उस शख्स का-सा होता है जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो | और इस हालत में उनके मुब्तला होने की वजह यह है कि वे कहते हैं, "तिजारत भी तो आख़िर सूद ही जैसा चीज़ है | हालाँकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया है और सूद को हराम | लिहाज़ा जिस शख्स को उसके रब की तरफ़ से यह नसीहत पहुँचे और आइन्दा के लिए वह सूदखोरी से बाज़ आ जाए, तो जो कुछ वह पहले खा चुका, उसका मामला अल्लाह के हवाले है| और जो इस हुक्म के बाद फिर उसी हरकत का इआदा करे, वह जहन्नमी है, जहाँ वह हमेशा रहेगा | अल्लाह सूद का मूठ मार देता है और सदकात को नाशो-नुमा देता है| और अल्लाह किसी नाशुक्रे, बदअमल इनसान को

establish Salah (prayers), and give Zakah (charity), will have their reward with their Rabb. They will have nothing to fear or to grieve. O you who have believed! Fear Allah and waive what is still due to you from usury if you are indeed believers. If you fail to do so, war shall be declared against you by Allah and His Rasool. If you repent, you may retain your principal, causing no loss to debtor and suffering no loss. If the debtor is in a difficulty, grant him time till it is easy for him to repay; but if you waive the sum by way of charity, it will be better for you, if you understand it. Fear the Day when you shall all return to Allah; when everyone shall be paid in full what they have earned and none shall be dealt with unjustly.	पसन्द नहीं करता	हाँ, जो लोग ईमान ले आएँ और नेक अमल करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, उनका अज्र बेशक उनके रब के पास है और उनके लिए किसी खौफ़ और रंज का मौक़ा नहीं	ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ख़ुदा से डरो और जो कुछ तुम्हारा सूद लोगों पर बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर वाकई तुम ईमान लाए हो	लेकिन अगर तुमने ऐसा न किया तो आगाह हो जाओ कि अल्लाह और उसके रसुल की तरफ़ से तुम्हारे किलाफ़ एलाने-जंग है| अब भी तौबा कर लो (और सूद छोड़ दो) तो अपना अस्ल सरमाया लेने के तुम हकदार हो	न तुम जुल्म करो, न तुमपर ज़ुल्म किया जाए	तुम्हारा कर्ज़दार तंगदस्त हो, तो हाथ खुलने तक उसे मुहलत दो, और जो सदका कर दो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, अगर तुम समझो	उस दिन की रुसवाई व मुसीबत से बचो, जबकि तुम अल्लाह की तरफ़ वापस होगे	वहाँ हर शख्स को उसकी कमाई हुई नेकी या बदी का पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा और किसी पर ज़ुल्म हरगिज़ न होगा	
Tafsir	